# अध्याय 1: स्वदेश

## विषय-सूची

11 प्रश्नावली · 24 प्रश्न


| | | |
|---|---|---|
| प्रश्नावली 1.1 | मेरी समझ से | 4 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.2 | मिलकर करें मिलान | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.3 | पंक्तियों पर चर्चा | 3 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.4 | सोच-विचार के लिए | 5 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.5 | अनुमान और कल्पना से | 4 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.6 | कविता की रचना | 2 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.7 | भाषा की बात — विराम चिह्नों को समझें | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.8 | शब्द-मित्र | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.9 | भाषा की बात — समानार्थी शब्द | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.10 | कविता का शीर्षक | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 1.11 | हमारे अस्त्र-शस्त्र | 1 प्रश्न |


## प्रश्नावली 1.1 — मेरी समझ से

### प्रश्न 1

"वह हृदय नहीं है पत्थर है" इस पंक्ति में हृदय के पत्थर होने से तात्पर्य है— (क) सामाजिकता से (ख) संवेदनहीनता से (ग) कठोरता से (घ) नैतिकता से

**हल**

कवि ने इस पंक्ति में ऐसे व्यक्ति के हृदय को पत्थर बताया है जिसमें स्वदेश के प्रति प्रेम नहीं है।
पत्थर में न संवेदना होती है, न अनुभूति — वह जड़ और निर्जीव होता है।
जो व्यक्ति देश के दुख-सुख से प्रभावित नहीं होता, जिसमें देशप्रेम की भावना नहीं जागती, उसका हृदय संवेदनहीन है।
अतः सही उत्तर है: (ख) संवेदनहीनता से।

**उत्तर: (ख) संवेदनहीनता से**

### प्रश्न 2

निम्नलिखित में से कौन-सा विषय इस कविता का मुख्य भाव है? (क) देश की प्रगति (ख) देश के प्रति प्रेम (ग) देश की सुरक्षा (घ) देश की स्वतंत्रता

**हल**

इस कविता में कवि गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने अपने पाठकों को देश के प्रति प्रेम के लिए प्रेरित और उत्साहित किया है।

कविता की बार-बार आती पंक्ति — "वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं" — यही मुख्य संदेश देती है।

कविता में साहस, उत्साह, बलिदान सभी देश-प्रेम की भावना से जुड़े हैं।

अतः सही उत्तर है: (ख) देश के प्रति प्रेम।

**उत्तर: (ख) देश के प्रति प्रेम**

---

### प्रश्न 3

"हम हैं जिसके राजा-रानी" — इस पंक्ति में 'हम' शब्द किसके लिए आया है? (क) देश के प्राकृतिक संसाधनों के लिए (ख) देश की शासन व्यवस्था के लिए (ग) देश के समस्त नागरिकों के लिए (घ) देश के सभी प्राणियों के लिए

**हल**

इस पंक्ति का संदर्भ है — जिस देश की मिट्टी में हम पले-बढ़े, जिससे दाना-पानी पाया, जिसे हम माता-पिता और बंधु मानते हैं, उस देश के 'हम' यानी नागरिक ही राजा-रानी हैं।

लोकतांत्रिक भावना में देश का शासन उसके नागरिकों के हाथ में होता है — इसीलिए कवि ने समस्त नागरिकों को राजा-रानी कहा है।

अतः सही उत्तर है: (ग) देश के समस्त नागरिकों के लिए।

**उत्तर: (ग) देश के समस्त नागरिकों के लिए**

---

### प्रश्न 4

कविता के अनुसार कौन-सा हृदय पत्थर के समान है? (क) जिसमें साहस की कमी है (ख) जिसमें स्नेह का भाव नहीं है (ग) जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है (घ) जिसमें स्फूर्ति और उमंग नहीं है

**हल**

कविता में कवि बार-बार यही कहते हैं — 'वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।'

कविता में साहस, जोश, स्नेह, उमंग सभी देश-प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में आए हैं, किंतु मुख्य भाव देश-प्रेम ही है।

अतः सही उत्तर है: (ग) जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है।

**उत्तर: (ग) जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है**

## प्रश्नावली 1.2 — मिलकर करें मिलान

### प्रश्न 1

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों का उनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलान कीजिए। स्तंभ 1: 1. जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं। 2. जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं। 3. जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी। 4. सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं। स्तंभ 2: 1. जिस देश की ज्ञान-संपदा से समूचा विश्व प्रभावित है। 2. जिस प्रकार युद्ध में तोप और तलवार की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रगति के लिए साहस और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। 3. जिसने किसी कार्य को करने का साहस छोड़ दिया हो वह किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। 4. जो स्वयं के साथ ही दूसरों को भी प्रेरित और उत्साहित नहीं कर सकते उनका जीवन निष्फल और अर्थहीन है।

**हल**

पंक्ति 1 — 'जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं' → स्तंभ 2 का अर्थ 3: जिसने किसी कार्य को करने का साहस छोड़ दिया हो वह किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

पंक्ति 2 — 'जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं' → स्तंभ 2 का अर्थ 4: जो स्वयं के साथ ही दूसरों को भी प्रेरित और उत्साहित नहीं कर सकते उनका जीवन निष्फल और अर्थहीन है।

पंक्ति 3 — 'जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी' → स्तंभ 2 का अर्थ 1: जिस देश की ज्ञान-संपदा से समूचा विश्व प्रभावित है।

पंक्ति 4 — 'सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं' → स्तंभ 2 का अर्थ 2: जिस प्रकार युद्ध में तोप और तलवार की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रगति के लिए साहस और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।

**उत्तर: 1→3, 2→4, 3→1, 4→2**

## प्रश्नावली 1.3 — पंक्तियों पर चर्चा

### प्रश्न 1

(क) इन पंक्तियों का अर्थ अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए: "निश्चित है निस्संशय निश्चित, है जान एक दिन जाने को। है काल-दीप जलता हरदम, जल जाना है परवानों को॥"

**हल**

इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि यह एक निश्चित सत्य है — एक दिन जीवन समाप्त होना है।
'काल-दीप' का अर्थ है — मृत्यु रूपी दीपक, जो हर समय जलता रहता है।
'परवाना' (पतंगा) उस दीपक की ओर आकर्षित होकर जल जाता है — यह मृत्यु का प्रतीक है।
कवि का संदेश है: जब मृत्यु निश्चित है, तो देश के लिए बलिदान देने में संकोच कैसा? देश पर मर-मिटना परवाने जैसा पवित्र बलिदान है।

**उत्तर: कवि कहते हैं कि मृत्यु अटल है; जैसे परवाना दीपक पर मिटता है, वैसे ही देशभक्त देश के लिए बलिदान देता है — यही जीवन की सार्थकता है।**

### प्रश्न 2

(ख) इन पंक्तियों का अर्थ अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए: "सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं। वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"

**हल**

कवि कहते हैं कि देश की उन्नति और रक्षा के लिए सब कुछ हमारे अपने हाथों में है।
'क्या तोप नहीं तलवार नहीं' — इस पंक्ति का अर्थ है कि हमारे पास सभी साधन और शक्ति उपलब्ध हैं; तोप-तलवार अर्थात् बल और संकल्प दोनों हमारे पास हैं।
फिर भी जो व्यक्ति देश के लिए कुछ नहीं करता, जिसमें देश-प्रेम नहीं है — उसका हृदय पत्थर जैसा जड़ और संवेदनहीन है।

**उत्तर: देश की रक्षा और उन्नति के सभी साधन हमारे पास हैं; जो फिर भी देश के लिए नहीं जागता, उसका हृदय पत्थर समान है।**

### प्रश्न 3

(ग) इन पंक्तियों का अर्थ अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए: "जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस-धार नहीं। वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"

**हल**

कवि कहते हैं कि जिस हृदय में भावनाओं का सोता नहीं है, जिसमें संवेदना और रस की धारा नहीं बहती — अर्थात् जो व्यक्ति न प्रेम, न करुणा, न उत्साह महसूस करता है —
ऐसा हृदय वास्तव में पत्थर जैसा निर्जीव है।

और ऐसे निर्जीव हृदय में स्वदेश का प्यार भी नहीं होता।

कवि का भाव है: देश-प्रेम एक गहरी भावना है — जिसमें भाव ही नहीं, उसमें देश-प्रेम भी नहीं।

---

**उत्तर: जो हृदय भावनाओं और रस से रिक्त है, वह पत्थर समान है — और ऐसे हृदय में स्वदेश का प्यार भी नहीं होता।**

## प्रश्नावली 1.4 — सोच-विचार के लिए

### प्रश्न 1

(क) "हम हैं जिसके राजा-रानी" पंक्ति में राजा-रानी किसे और क्यों कहा गया है?

**हल**

कवि ने इस पंक्ति में राजा-रानी देश के नागरिकों को कहा है।
कारण: जो देश हमारी जन्मभूमि है, जिसकी मिट्टी में हम पले-बढ़े, जिससे हमने अन्न-जल पाया, जिसे हम माता-पिता और बंधु मानते हैं — उस देश के असली स्वामी उसके नागरिक ही होते हैं।
लोकतंत्र में शासन सत्ता जनता के हाथ में होती है; नागरिक ही राजा-रानी होते हैं।
इसीलिए कवि ने नागरिकों को राजा-रानी कहकर उनमें गर्व और उत्तरदायित्व की भावना जगाई है।

**उत्तर: देश के नागरिकों को राजा-रानी कहा गया है, क्योंकि लोकतंत्र में देश के असली स्वामी उसके नागरिक होते हैं।**

### प्रश्न 2

(ख) 'संसार-संग' चलने से आप क्या समझते हैं? जो व्यक्ति 'संसार-संग' नहीं चलता, संसार उसका क्यों नहीं हो पाता है?

**हल**

'संसार-संग चलना' का अर्थ है — समाज के साथ मिलकर, उसके अनुरूप, सक्रिय और सहभागी होकर जीना।
अर्थात् देश-समाज की उन्नति में भागीदार बनना, सामूहिक जीवन में योगदान देना।
जो व्यक्ति समाज से कटकर, निष्क्रिय रहकर जीता है — वह न समाज के सुख-दुख में भागीदार बनता है, न समाज उसे अपना मानता है।
ऐसे व्यक्ति का समाज में कोई महत्त्व नहीं रहता और न ही वह समाज का हिस्सा बन पाता है — इसीलिए कवि कहते हैं कि 'संसार उसका होता नहीं।'

**उत्तर: 'संसार-संग चलना' अर्थात् समाज के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर जीना। जो इससे विमुख रहता है, समाज उसे अपना नहीं मानता।**

### प्रश्न 3

(ग) "उस पर है नहीं पसीजा जो/क्या है वह भू का भार नहीं।" पंक्ति से आप क्या समझते हैं? बताइए।

**हल**

'पसीजना' का अर्थ है — करुणा से द्रवित होना, देश के प्रति भाव से भर जाना।
कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति देश की दशा देखकर भी नहीं पसीजता, न उसमें देश-प्रेम की भावना जागती है — ऐसा व्यक्ति धरती (भू) पर एक बोझ के समान है; उसका जीवन निरर्थक है।
देश के प्रति उत्तरदायित्व न निभाने वाला व्यक्ति संसाधनों का उपभोग तो करता है किंतु देता कुछ नहीं — वह भार है, योगदान नहीं।

**उत्तर: जो देश के प्रति संवेदनशील नहीं है, जिसमें देश-प्रेम नहीं जागता — वह पृथ्वी पर एक भार के समान निरर्थक है।**

### प्रश्न 4

(घ) कविता में देश-प्रेम के लिए बहुत-सी बातें आई हैं। आप 'देश-प्रेम' से क्या समझते हैं? बताइए।

**हल**

देश-प्रेम का अर्थ है — अपने देश के प्रति गहरी आत्मीयता, लगाव और सेवा की भावना।
इसमें शामिल है: देश की मिट्टी, जल, भाषा, संस्कृति और नागरिकों से प्रेम।
देश-प्रेम केवल भावना नहीं — इसमें देश की उन्नति के लिए कार्य करना, अन्याय का विरोध करना, और आवश्यकता पड़ने पर बलिदान देना भी शामिल है।
कविता के अनुसार देश-प्रेम में साहस, जोश, उत्साह और संवेदना — सभी समाहित हैं।

**उत्तर: देश-प्रेम अर्थात् अपने देश की माटी, संस्कृति और नागरिकों से गहरा लगाव, तथा देश की उन्नति और रक्षा के लिए सक्रिय होना।**

### प्रश्न 5

(ङ) यह रचना एक आह्वान गीत है जो हमें देश-प्रेम के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है। इस रचना की अन्य विशेषताएँ ढूँढ़िए और लिखिए।

**हल**

1. तुकबंदी: प्रत्येक पद के अंतिम शब्दों में तुक है — जैसे 'प्यार-सार', 'दानी-रानी', 'लासानी-दीवानी' — जिससे लयात्मकता आती है।
2. अनुप्रास अलंकार: 'साहस-संसार-स्वदेश', 'दाना-पानी', 'राजा-रानी' जैसे शब्दों में ध्वनि-सौंदर्य है।
3. रूपक अलंकार: हृदय को पत्थर और परवाने को बलिदान का प्रतीक बताया गया है।
4. टेक (refrain): 'वह हृदय नहीं है पत्थर है / जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' — बार-बार आकर कविता के मुख्य भाव को दृढ़ करती है।
5. शब्द-विन्यास: 'है काल-दीप जलता हरदम' जैसी पंक्तियों में 'है' पहले लाकर लयात्मकता बढ़ाई गई है।
6. राष्ट्रीय चेतना: कविता व्यक्तिगत से सामूहिक की ओर जाती है — 'हम हैं जिसके राजा-रानी।'

**उत्तर: कविता में तुकबंदी, टेक (refrain), रूपक, अनुप्रास और शब्द-विन्यास की विशेषताएँ हैं जो इसे लयात्मक, प्रभावशाली और प्रेरणादायक बनाती हैं।**

## प्रश्नावली 1.5 — अनुमान और कल्पना से

### प्रश्न 1

(क) "जिसने कि खजाने खोले हैं" अनुमान करके बताइए कि इस पंक्ति में किस प्रकार के खजाने की बात की गई होगी?

**हल**

इस पंक्ति में 'नव रत्न दिये हैं लासानी' साथ में है, जिससे स्पष्ट होता है कि यहाँ भौतिक खजाने नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों के खजाने की बात हो सकती है।
भारत के खजाने: वेद, उपनिषद्, गणित, विज्ञान, कला, संगीत, आयुर्वेद जैसी ज्ञान-संपदा;
साथ ही खनिज-सम्पदा, वन-संसाधन, नदियाँ, उपजाऊ भूमि — ये सब भी खजाने हैं।
इन्हीं से 'नव रत्न' अर्थात् अनुपम रत्न मिले हैं जिन पर ज्ञानी भी मुग्ध हैं।

**उत्तर: इस पंक्ति में ज्ञान-संपदा (वेद, विज्ञान, कला, आयुर्वेद) तथा प्राकृतिक संसाधनों के खजाने की बात की गई होगी।**

---

### प्रश्न 2

(ख) "जिसकी मिट्टी में उगे बड़े" पंक्ति में 'उगे-बड़े' किसके लिए और क्यों कहा गया होगा?

**हल**

'उगे-बड़े' इस पंक्ति में देश के नागरिकों — हम सबके लिए कहा गया है।
जैसे एक पेड़ मिट्टी में उगकर बड़ा होता है, उसी प्रकार हम भी इस देश की माटी में जन्म लेकर, उसका अन्न-जल पाकर बड़े हुए हैं।
यह उपमा देशवासियों की जन्मभूमि के प्रति कृतज्ञता और आत्मीय संबंध को व्यक्त करती है।

**उत्तर: 'उगे-बड़े' देश के नागरिकों के लिए कहा गया है — जो इस देश की मिट्टी में जन्मे और पले-बढ़े हैं, जैसे पेड़ भूमि में उगकर बड़ा होता है।**

---

### प्रश्न 3

(ग) "वह हृदय नहीं है पत्थर है" पंक्ति में 'हृदय' के लिए 'पत्थर' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया होगा?

**हल**

पत्थर जड़, निर्जीव और संवेदनहीन होता है — उसमें न प्रेम होता है, न करुणा, न उत्साह।
कवि ने उस व्यक्ति के हृदय को पत्थर कहा है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं है।
ऐसा व्यक्ति देश के सुख-दुख से अप्रभावित रहता है — ठीक जैसे पत्थर किसी भावना से द्रवित नहीं होता।
यह 'रूपक अलंकार' है जो निर्जीव पत्थर की तुलना से संवेदनहीन हृदय की कठोरता को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है।

**उत्तर: पत्थर जड़ और संवेदनहीन होता है; जिस हृदय में देश-प्रेम नहीं, वह भी पत्थर जैसा निर्जीव है — इस भाव को रूपक अलंकार से व्यक्त किया गया है।**

## प्रश्न 4

(ङ) देश के किन-किन संसाधनों या वस्तुओं को संरक्षण की आवश्यकता है और क्यों?

**हल**

देश के अनेक प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों को संरक्षण की आवश्यकता है:
जल, नदियाँ और जलाशय — क्योंकि ये जीवन का आधार हैं और प्रदूषण व अति-उपयोग से तेज़ी से घट रहे हैं।
वन तथा वन्य-जीव — क्योंकि ये पर्यावरण का संतुलन बनाए रखते हैं और कटाई-शिकार से अनेक प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं।
उपजाऊ मिट्टी — क्योंकि इसी पर कृषि और अन्न-उत्पादन निर्भर है।
ऐतिहासिक धरोहर, स्मारक तथा भाषा-संस्कृति — क्योंकि ये देश की पहचान और गौरव हैं।

**उत्तर: जल-नदियाँ, वन एवं वन्य-जीव, उपजाऊ मिट्टी तथा ऐतिहासिक-सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षण की आवश्यकता है — क्योंकि ये सीमित एवं क्षयशील हैं और देश के जीवन, पर्यावरण-संतुलन तथा पहचान के आधार हैं।**

## प्रश्नावली 1.6 — कविता की रचना

### प्रश्न 1

(क) शब्दों के तुक मिलाने से कविता में क्या विशेष प्रभाव पड़ा है? (पंक्तियों के अंतिम शब्दों को ध्यान से देखिए — 'दाना-पानी' और 'राजा-रानी' जैसे शब्दों की अंतिम ध्वनि एक-सी है।)

**हल**

तुकबंदी से कविता में लयात्मकता और संगीतात्मकता आती है।
तुक मिलाने से कविता को याद करना सरल हो जाता है और वह मन में बैठ जाती है।
तुकबंदी पंक्तियों के बीच एकसूत्रता लाती है और पाठक का ध्यान बनाए रखती है।
उदाहरण: 'प्यार-सार-संसार-पार-उद्धार-धार' — इन तुकों से प्रत्येक पद का अंत एक जैसा लगता है जो श्रोता में उत्साह भरता है।

**उत्तर: तुकबंदी से कविता में लय, संगीतात्मकता और स्मरणीयता आती है; यह पाठक का ध्यान आकर्षित करती है और भाव को प्रभावशाली बनाती है।**

### प्रश्न 2

(ख) कविता को प्रभावशाली बनाने के लिए और क्या-क्या प्रयोग किए गए हैं?

**हल**

1. टेक (Refrain): 'वह हृदय नहीं है पत्थर है / जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' पंक्ति हर पद के अंत में दोहराई गई है — यह मुख्य भाव को बार-बार दृढ़ करती है।
2. रूपक अलंकार: हृदय = पत्थर, काल = दीपक, बलिदान = परवाने का जलना — ये प्रतीक भाव को गहरा बनाते हैं।
3. अनुप्रास अलंकार: 'साहस-संसार-स्वदेश', 'दाना-पानी', 'राजा-रानी' — एक जैसी ध्वनियों से श्रुति-मधुरता आती है।
4. शब्द-विन्यास: 'है जान एक दिन जाने को', 'है काल-दीप जलता हरदम' — क्रिया 'है' को पहले रखकर लयात्मकता बढ़ाई गई है।
5. आह्वान-शैली: कविता प्रश्न और चुनौती के रूप में लिखी है — 'क्या तोप नहीं तलवार नहीं?' — जो पाठक को जगाती है।

**उत्तर: टेक (refrain), रूपक, अनुप्रास, शब्द-विन्यास और आह्वान-शैली — इन सभी के प्रयोग से कविता प्रभावशाली बनी है।**

## प्रश्नावली 1.7 — भाषा की बात — विराम चिह्नों को समझें

### प्रश्न 1

कविता में आई हुई निम्नलिखित पंक्तियों में कुछ शब्दों के बीच एक चिह्न (-) लगा है जिसे योजक चिह्न कहते हैं। कविता में संदर्भ के अनुसार योजक चिह्नों के स्थान पर 'का', 'की', 'के' और 'में' से कौन-से शब्द जोड़ेंगे जिससे अर्थ स्पष्ट हो सके। लिखिए। (संकेत — 'जो चल न सका संसार के संग') पंक्तियाँ: 1. "जो चल न सका संसार-संग" 2. "बहती जिसमें रस-धार नहीं" 3. "पाया जिसमें दाना-पानी" 4. "हैं माता-पिता बंधु जिसमें" 5. "हम हैं जिसके राजा-रानी" 6. "जिससे न जाति-उद्धार हुआ"

**हल**

1. संसार-संग → संसार के संग (योजक के स्थान पर 'के')
2. रस-धार → रस की धार (योजक के स्थान पर 'की')
3. दाना-पानी → दाना और पानी (यहाँ योजक दो वस्तुओं को जोड़ता है — 'और' का संकेत)
4. माता-पिता → माता और पिता (दो संबंध जोड़ रहे हैं)
5. राजा-रानी → राजा और रानी
6. जाति-उद्धार → जाति का उद्धार (योजक के स्थान पर 'का')

**उत्तर: 1→'के' (संसार के संग), 2→'की' (रस की धार), 3→ और (दाना और पानी), 4→ और (माता और पिता), 5→ और (राजा और रानी), 6→'का' (जाति का उद्धार)**

## प्रश्नावली 1.8 — शब्द-मित्र

### प्रश्न 1

कविता में से ऐसी पंक्तियाँ चुनिए जिनमें 'है' शब्द का प्रयोग पहले हुआ है। चुनी हुई पंक्तियों में शब्दों के स्थान बदलकर पुनः लिखिए। (संकेत — 'है जान एक दिन जाने को' → 'जान एक दिन जाने को है।')

**हल**

कविता में 'है' पहले आई पंक्तियाँ:

1. 'है जान एक दिन जाने को' → शब्द-स्थान बदलने पर: 'जान एक दिन जाने को है।'
2. 'है काल-दीप जलता हरदम' → शब्द-स्थान बदलने पर: 'काल-दीप हरदम जलता है।'
3. 'है दुनिया दीवानी' (पंक्ति में) → शब्द-स्थान बदलने पर: 'दुनिया दीवानी है।'

अब नीचे दी गई पंक्ति में 'है, हैं' शब्द पहले करके पुनः लिखिए:

"जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं / जिस पर है दुनिया दीवानी" →

→ 'हैं जिस पर ज्ञानी भी मरते / है जिस पर दुनिया दीवानी'

परिवर्तन: 'है/हैं' को पहले लाने से पंक्ति में लयात्मकता और काव्यात्मकता आती है; गद्य-भाषा में यह सामान्य लगती है किंतु कविता में यह संगीतमय प्रवाह बनाती है।

**उत्तर: 'है काल-दीप जलता हरदम' → 'काल-दीप हरदम जलता है'; 'है जान एक दिन जाने को' → 'जान एक दिन जाने को है।' — 'है' पहले रखने से लयात्मकता बढ़ती है।**

## प्रश्नावली 1.9 — भाषा की बात — समानार्थी शब्द

### प्रश्न 1

कविता से चुनकर कुछ शब्द निम्न तालिका में दिए गए हैं। दिए गए शब्दों से इनके समानार्थी शब्द ढूँढ़कर तालिका में दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए। तालिका के शब्द (जिनके समानार्थी ढूँढ़ने हैं): भू, दीप, हृदय, तलवार, दुनिया, पत्थर दिए गए समानार्थी शब्द (समानार्थी शब्द बॉक्स): दिल, पाहन, असि, प्रदीप, दुनिया, धरा, पाषाण, जग, संसार, कृपाण, जी, पृथ्वी, दीपक

**हल**

भू → धरा, पृथ्वी
दीप → प्रदीप, दीपक
हृदय → दिल, जी
तलवार → असि, कृपाण
दुनिया → संसार, जग
पत्थर → पाहन, पाषाण

**उत्तर: भू→धरा/पृथ्वी; दीप→प्रदीप/दीपक; हृदय→दिल/जी; तलवार→असि/कृपाण; दुनिया→संसार/जग; पत्थर→पाहन/पाषाण**

## प्रश्नावली 1.10 — कविता का शीर्षक

### प्रश्न 1

इस कविता का शीर्षक है 'स्वदेश'। यदि आपको भी इस कविता की किसी एक पंक्ति को चुनकर नया शीर्षक देना हो तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

**हल**

मैं 'वह हृदय नहीं है पत्थर है' पंक्ति को नया शीर्षक चुनूँगा/चुनूँगी।

कारण:

1. यह पंक्ति कविता का केंद्रीय विचार है और बार-बार आती है — यही कविता की 'टेक' है।
2. यह पंक्ति पाठक को तुरंत जिज्ञासु बनाती है — 'हृदय पत्थर कैसे होता है?'
3. यह शीर्षक कविता के मूल संदेश को — देश-प्रेम की अनिवार्यता — संक्षेप में व्यक्त करता है।

वैकल्पिक विकल्प: 'सब कुछ है अपने हाथों में' — क्योंकि यह पंक्ति आत्मनिर्भरता और कर्तव्य-भाव का संदेश देती है।

**उत्तर: 'वह हृदय नहीं है पत्थर है' — यह पंक्ति कविता की मूल भावना को व्यक्त करती है और बार-बार दोहराई जाने से शीर्षक के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त है।**

## प्रश्नावली 1.11 — हमारे अस्त्र-शस्त्र

### प्रश्न 1

आप बताइए कि निम्नलिखित स्वदेश प्रेमियों के अस्त्र-शस्त्र क्या होंगे? • विद्यार्थी • अध्यापक • कृषक • चिकित्सक • वैज्ञानिक • श्रमिक • पत्रकार

**हल**

विद्यार्थी: ज्ञान, पुस्तकें, परिश्रम और अनुशासन — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। शिक्षा प्राप्त कर देश को आगे ले जाना उनका योगदान है।

अध्यापक: ज्ञान, वाणी, पाठ्यपुस्तकें और प्रेरणा — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। वे राष्ट्र-निर्माताओं को तैयार करते हैं।

कृषक: हल, बीज, परिश्रम और धरती — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। वे देश का पेट भरते हैं।

चिकित्सक: दवाइयाँ, उपकरण, सेवा और करुणा — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। वे देशवासियों को स्वस्थ रखते हैं।

वैज्ञानिक: अनुसंधान, प्रयोगशाला, बुद्धि और जिज्ञासा — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। वे देश को प्रगतिशील बनाते हैं।

श्रमिक: हाथ, औज़ार, परिश्रम और दृढ़ता — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। वे देश की संरचना खड़ी करते हैं।

पत्रकार: कलम, सत्य, साहस और जनजागरण — ये उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। वे समाज की आवाज़ उठाते हैं।

**उत्तर: विद्यार्थी→ज्ञान/परिश्रम; अध्यापक→वाणी/प्रेरणा; कृषक→हल/परिश्रम; चिकित्सक→दवाइयाँ/सेवा; वैज्ञानिक→अनुसंधान/बुद्धि; श्रमिक→हाथ/औज़ार; पत्रकार→कलम/सत्य।**